।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

ओम् प्रतिष्ठ्। यजु0 2/13
ओ३म् को अपने हृदय मन्दिर में बैठा लो अथवा ओ३म् के अन्दर बैठ जाओ।
Let us make God sit in the temple of our heart or We should sit down in god Almighty. We should make him our cover.

वर्ष 36, अंक 30 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 10 जून, 2013 से रविवार 16 जून, 2013 तक
विक्रमी सम्वत् 2070 दयानन्दाब्द : 189
सृष्टि सम्वत् 1960853114 वार्षिक : 250 रुपये
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
Website:www.thearyasamaj.org पृष्ठ 1 से 4 तक

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग पश्चिम में

प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आज के आर्यवीर ही आर्यसमाज के भविष्य का निर्माण करेंगे – ब्र. राजसिंह आर्य

युवाओं के सतत् निर्माण के लिए आर्यवीर दल को एक ट्रेनिंग सैन्टर की आवश्यकता – ब्र. चाँदसिंह आर्य

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश का प्रान्तीय शिविर 25 मई से 2 जून, 2013 तक एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग पश्चिम में लगाया गया। इस शिविर में 195 आर्यवीरों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। 2 जून को समापन समारोह एमिटी शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार चौहान, एम.डी.एच. के निदेशक श्री राजीव गुलाटी, श्री ठाकुर विक्रम सिंह, श्री राकेश ग्रोवर, श्री तुषार आर्य, सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रचार मन्त्री ब्र. चांदसिंह आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य, विद्यालय चेयरमैन श्री सत्यानन्द आर्य, मन्त्री श्री राजीव आर्य, श्रीमती सुनीति आर्या, श्री शिव कुमार मदान, श्री घई साहब, श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा, श्री मनवीर सिंह राणा, श्री सुरेन्द्र कोचर, श्री रवि बहल, श्री बलदेव राज सेठ, राष्ट्रकवि श्री सारस्वत मोहन मनिषी, श्री जोगेन्द्र खट्टर, श्रीमती स्नेह भाटिया, श्रीमती शारदा आर्या, सुश्री लिपिका आर्या, आदि प्रमुख अतिथियों के संरक्षण में भव्यता से सम्पन्न हुआ।

महाशय राजीव गुलाटी, निदेशक एम.डी.एच. उद्बोधन देते हुए

समारोह में पधारे समस्त अतिथियों का सम्मान आर्यवीर दल के प्रमुख अधिकारी संचालक श्री वीरेन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष श्री जितेन्द्र भाटिया, सह संचालक श्री जगवीर आर्य, प्रचार मन्त्री श्री बृहस्पति आर्य एवं महामन्त्री श्री सुन्दर आर्य जी द्वारा किया गया।

समापन समारोह का कार्यक्रम ठाकुर विक्रम सिंह जी ने विधिवत ध्वजारोहण व परेड निरीक्षण करके किया। परेड निरीक्षण दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र0 राजसिंह आर्य एवं सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रचार मन्त्री ब्र. चांदसिंह आर्य व दल के मुख्य अधिकारियों के नेतृत्व में हुआ।

ध्वज उद्बोधन में ठाकुर विक्रम सिंह जी ने आर्यवीरों को राजनीति में आकर राष्ट्र की रक्षा व सेवा करने के लिए प्रेरणा दी। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अशोक कुमार चौहान ने की। वे अपने पूरे परिवार सहित पधारे थे। उन्होंने अपने उद्बोधन में आर्यवीरों को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा एवं आशीर्वाद देते हुए संगठन को हर प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन दिया।

डॉ. अशोक कुमार चौहान, चेयरमैन, एमिटी आशीर्वाद देते हुए

श्री राजीव गुलाटी जी ने आर्यवीरो को हृदय से आशीर्वाद देते हुए आर्यवीरों के परिवारजनों को शुभकामनाएं दी। साथ ही संगठन के इस प्रकार से युवाओं के निर्माण कार्य के लिए धन्यवाद किया।

श्री तुषार आर्य ने कहा कि संगठन को आगे बढ़ाने के लिए मैं स्वयं एक कार्यकर्ता साथी की तरह आपके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलना चाहूंगा। उन्होंने कहा मुझे खुशी है कि आर्यवीर दल युवाओं में इतना प्रेरणादायक व निर्माण का कार्य कर रहा है।

समापन समारोह के अवसर पर ध्वजारोहण करते सुप्रसिद्ध उद्योगपति ठाकुर विक्रम सिंह जी एवं अन्य पदाधिकारीगण

समारोह में पधारने पर महाशय राजीव गुलाटी जी को स्मृति चिह्न प्रदान करते सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य, महामन्त्री विनय आर्य, श्री वीरेन्द्र आर्य, श्री जगबीर आर्य एवं श्री जितेन्द्र भाटिया

मुख्य वक्ता श्री ब्र. चांदसिंह आर्य ने युवाओं को राष्ट्र व समाज सेवा के लिए प्रेरणा दी व शाखाओं के माध्यम से अधिक से अधिक युवाओं को आर्यसमाज व वैदिक विचारधारा से जुड़ने व जोड़ने के लिए प्रेरणा दी। साथ ही मुख्य अतिथियों, सभा के अधिकारियों, विभिन्न आर्यसमाजों से

– शेष पृष्ठ 3 पर एवं
चित्रमय झांकी पृष्ठ 4 पर

वेद-स्वाध्याय

अन्धी से विवाह कौन करेगा

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

यस्यानक्षा दुहिता जात्वास कस्तां विद्वाँ अभि मन्याते अन्धाम्। कतरो मेनिं प्रति तं मुचाते य ईं वहाते य ईं वा वरेयात्। ऋ0 10/26/5

अर्थ – ***(यस्य)*** जिसकी ***(दुहिता)*** कन्या ***(जातु)*** निश्चित रूप से ***(अनक्षा)*** नेत्रविहीन, अन्धी ***(आस)*** है ***(ताम् अन्धाम्)*** उस अन्धी को ***(कः विद्वान्)*** कौन विद्वान ***(अभि मन्याते)*** कौन आश्रय देगा? ***(यः ईम् वहाते)*** जो इससे विवाह करता है ***(ईम् वा वरेयात्)*** अथवा वरण करता है ***(कतरः)*** कौन ***(तम् मेनिम्)*** उस वज्र मूर्ख को ***(तं प्रति मुचाते)*** उससे छुड़ाएगा।

क्या तुमने यह सुना है कि किसी स्वस्थ, सुन्दर युवक ने किसी अन्धी कन्या से विवाह कर लिया। इतिहास में अन्धे धृतराष्ट्र के साथ गंधार देश के सुनयनों वाली गंधारी का विवाह हुआ, इससे सब अवगत हैं परन्तु किसी नेत्रहीन स्त्री से किसी पुरुष का स्वेच्छा से विवाह हुआ हो यह सुनने में नहीं आता। कहीं अपवाद हो तो और बात है। नेत्रहीन कन्या के माता–पिता को उसके भविष्य की चिन्ता सताने लगती है। वे कहते हैं कि हमारे रहते तो इसका निर्वाह हो जाएगा परन्तु आगे भगवान् ही रखवाला है। मन्त्रें यही बात आलंकारिक रूप से कही है – यस्यानक्षा दुहिता जात्वासा जिसकी कन्या निश्चित रूप से नेत्रहीन, अन्धी है, उसके साथ कस्ताम् विद्वान् अभिमन्याते अन्धाम् उस अन्धी को कौन विद्वान् आश्रय देगा। पत्नी के साथ ही पति की पूर्णता होती है। जब पत्नी नेत्रहीन हो तो पुरुष को ही सारे कार्य करने होंगे ऐसी स्थिति में 'अन्धा नोते दो बुलाए' अर्थात् किसी अन्धे पुरुष को निमन्त्रण देने का अर्थ दूसरे सहयोगी को भी अर्थात् दो व्यक्तियों को निमन्त्रण देना है।

इस स्थिति में यदि कोई युवक उस नेत्रहीन कन्या से विवाह का हठ करता है तो उस दुबुद्धि को कौन समझा सकता है। तुम कहोगे कि वह युवक सचमुच ही वज्रमूर्ख है य ईम् वहाते य ईम् वा वरेयात् जो इसका वरण करता है अथवा उसका वहन करने को तैयार हो जाता है कतरो मेनिं प्रति तं मुचाते उस मन्दबुद्धि को इससे कौन छुड़ाएगा जो जानबूझकर जाल में अपने पैर फंसा रहा है। किसी अनजान को तो समझाया जा सकता है किन्तु परन्तु जानकार को नहीं जिसने किसी न करने योग्य कार्य को करने की मन में ठान ली हो।

मन्त्र में एक पहेली है। प्रकृति ही वह जड़ और नेत्रहीन कन्या है जिसके स्नेह बन्धन में लोग निगाडित हो उससे नाता जोड़ लेते हैं। पुरुष तो चेतन और सोच–विचार कर कार्य करने वाला है परन्तु विवेक ज्ञान अर्थात् ज्ञान नेत्र से विहीन वह इस अन्धी प्रकृति से ही सम्बन्ध स्थापित कर बैठा है और जन्म–मरण के जाल में न जाने कितनें दिनों से बंधा हुआ है। यह प्रकृति, ***रूपैः सप्तभिरात्मानं बध्नाति प्रधानः कोशकार वद विमोचयत्येकेन रूपेण*** (सांख्य. 3/73) सात रूप– धर्म अधर्म, ज्ञान–अज्ञान, वैराग्य–अवैराग्य, ऐश्वर्य–अनैश्वर्य ये आठ प्रकृतिजनित रूप हैं। इनमें ज्ञान के अतिरिक्त शेष सात का योग होने पर प्रकृति पुरुष को बांध लेती है। जैसे रेशम का कीड़ा अपने चारों ओर तन्तुओं का ताना–बाना बुन उसमें स्वयं को निगडित हो जाता है। अब उसके इस बन्धन से छूटने का एक ही उपाय है कि वह धागे को काटकर इस कोश से मुक्त हो जाए ऐसे ही प्रकृति के बन्धन से छूटने का विवेक ज्ञान ही एकमात्र उपाय है अन्यथा जीवात्मा प्रकृति जन्य सूक्ष्म शरीर में लिपटा हुआ जन्म–मरण के चक्र में ही पड़ा रहेगा।

अब प्रश्न उठता है कि धर्मादि कार्य जब बन्धन के कारण हैं तो फिर इनको किसलिए किया जाए? ऐसे ही वैराग्य और योगज सिद्धियां भी फिर तो निरर्थक हो जाएंगी तब शास्त्रकारों ने इनका उपदेश किसलिए किया है।

इसका उत्तर देते हुए सांख्य दर्शन कहता है – ***निमित्तत्वमविवेकस्येति न दृष्टहानिः।*** सांख्य. 3/74

धर्म, यज्ञ, परोपकार, वैराग्य में भी बन्धन का कारण अविवेक बना ही रहता है। इमें धर्म आदि का निषेध नहीं किया है। ये सभी कर्म धर्म, यज्ञ, परोपकार, वैराग्य, सिद्धियां आदि अन्तःकरण की शुद्धि के लिए आवश्यक हैं। इनसे निष्काम कर्म का अभ्यास हो जाता है।

ज्ञानन्मुक्तिः बन्धेविपर्ययात्।।

सांख्य दर्शन 3/23–24

आत्मज्ञान से मुक्ति और इसके विपरीत अविवेक से बंधा होता है। जैसे कोई नर्तकी रंगशाला में दर्शकों को भांति–भांति के नृत्यों से आकर्षित करती है और दर्शक भी उसके सथ ताल में ताल मिलाकर झूम रहे हैं वैसे ही अविवेक ग्रस्त लोगों को प्रकृति विविध रूपों से आकर्षित कर उन्हें बन्धन में बांधे रखती है। नर्तकी के नृत्य को देखते हुए किसी पुरुष ने उसकी सारी भाव भंगिमा को समझ लिया और वह रंगमंच से बाहर निकल आया तब भी नर्तकी का नृत्य समाप्त नहीं हो जाता। वह वहीं बैठे हुए भी लोगो करे लुभाती है। इसी भांति जिस पुरुष को यह ज्ञान हो गया कि अरे! यह हो स्वयं अन्धी है तब मुझे कैसे सन्मार्ग दिखाएगी? मैं अज्ञानवश इसके मोहपाश में बंधा हुआ सुखी–दुःखी हो रहा हूं। इसने मुझे बहुत नाच नचाया है परन्तु अब मैंने इसकी वास्तविकता को जान लिया है वह अससे पराड्मुख हो विवेक ज्ञान का उपासक बन जाता है और ***तत्त्वाभ्यासान्नेति नेतीति त्यागाद् विवेक सिद्धिः।।*** सांख्यदर्शन 3/75 तत्त्व का अभ्यास अर्थात् न तो मूल प्रकृति आत्मा है और न ही उसके विकार सृष्टि के पदार्थ। ऐसा जान वह इनका त्याग करता चला जाता है और अन्त में आत्मा–परमात्मा तक पहुंच जाता है। तब कहीं जाकर उसका इस अंधी प्रकृति से सम्बन्ध विच्छेद होता है। – ***क्रमशः***

श्री वी. नारायणन को वेद रत्न पुरस्कार

वर्ष 2013 के वेदरत्न पुरस्कार कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन, कालीकट (केरल) द्वारा वी. नारायणन को दिनांक 26 मई, 2013को कोझीकोड में आयोजित एक समारोह में दिया गया। उन्हें 25551/– रुपये, स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। श्री वी नारायणन विगत 20 वर्षों से पारम्परिक वेद विद्यालय ब्रह्मस्वम मठ त्रिसूर में सेवा कर रहे हैं। इससे पूर्व पुरस्कार के विषय में फाउंडेशन के अध्यक्ष आचार्य एम. आर. राजेश में जानकारी दी। पुरस्कार आचार्य राजेश नम्बूदरी ने प्रदान किया।

– अरुण प्रभाकरण

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर के तत्वावधान में
योग साधना एवं वैदिक प्रवचन शिविर

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू–कश्मीर के तत्वावधान में एवं श्री अरुण चौधरी जी के संयोजन में पत्नीटॉप में **20 जनू से 23 जून तक** योग साधना एवं वैदिक प्रवचन शिविर स्वामी विवेकानन्द जी (रोजड़) के मार्गदर्शन में आयोजित किया जा रहा है। शिविर में रहने एवं भोजन के लिए होटल की व्यवस्था की गई है। शिविर में भाग लेने के लिए प्रति व्यक्ति 3500/– रुपये देय होगा, जिसमें जम्मू से बस द्वारा आना–जाना, आवास एवं भोजन व्यय सम्मिलित है। जो महानुभाव भाग लेना चाहें वे मोबाइल 09419187171सम्पर्क करें।

– भारत भूषण आर्य, प्रधान, 9419133884

समस्त विद्यालयों एवं विद्यार्थियों को उत्कृष्ट परिणामों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा

समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक। पूरे सैट का मूल्य 400/-

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रकाशित कराई गई नैतिक शिक्षा की ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

☎ : 23360150; Email : aryasabha@yahoo.com

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियां लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्त्वावधान में गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा) में

राष्ट्रीय शिक्षिका प्रशिक्षण शिविर

16 जून से 23 जून 2013

इस शिविर के माध्यम से कन्याओं को शारीरिक एवं बौद्धिक विकास, राष्ट्रीय चेतना, अनुशासित जीवन, आत्मरक्षण, शस्त्र प्रशिक्षण, संगीत एवं वैदिक संस्कृति के प्रति निष्ठा उत्पन्न कर शिक्षिका बनाना ही हमारा मुख्य उद्देश्य है। शिविर शुल्क प्रति शिविरार्थी **350/– रुपये** होगा। पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जाएंगी। शिविरार्थी 6 जून तक नामांकन करा लें तथा 15 जून की शाम तक पहुंच जाएं।

शिविरार्थियों के लिए आवश्यक सामान एवं निर्देश: गणवेश : दो जोड़ी सफेद सलवार कमीज, केसरिया दुपट्टा, सफेद मौजे, सफेद पी.टी. जूते, एवं पहनने के उचित कपड़े, टार्च, लाठी, नोटबुक, पेन, मग, साबुन, हल्का बिस्तर साथ लाएं। कोई कीमती सामान न लाएं। शिविरार्थी की न्यूनतम आयु 15 वर्ष व शैक्षणिक योग्यता नवीं पास है। जिन वीरांगनाओं ने पहले 2–3 शिविर किए हों वे भाग ले सकती हैं। **पहुंचने का मार्ग : 1. दिल्ली अम्बाला मार्ग से आने वाले शिविरार्थी पिपली बस स्टाप पर उतरकर लोकल बस अथवा टैम्पो द्वारा युनिवर्सिटी थर्ड गेट पर उतरें। 2. कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से उतरकर टैम्पो द्वारा गुरुकुल कुरुक्षेत्र पहुँचें।**

निवेदक

आचार्य देवव्रत	स्वामी देवव्रत सरस्वती	साध्वी डॉ. उत्तमा यति	मृदुला चौहान
प्रधान	प्रधान संचालक	प्रधान संचालिका	संचालिका
गुरुकुल कुरुक्षेत्र	**सार्वदेशिक आर्य वीर दल**	**सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल**	
(9416038142)	(09868620631)	(09672286863)	(09810702762)

आर्य वीर दल उत्तराखण्ड का प्रान्तीय चरित्र निर्माण एवं शारीरिक प्रशिक्षण शिविर

23 जून से 30 जून, 2013 तक आर्य गुरुकुल पौन्धा (देहरादून)

सभी आर्यजन अपने-अपने प्रान्त में बच्चों को प्रशिक्षण शिविर में अवश्य ही भेजें।

इन शिविरों के उद्घाटन एवं समापन समारोह में आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर आर्यसमाज की युवा पीढ़ी को अपना आशीर्वाद प्रदान करके उत्साहवर्धन करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर .....

आए अधिकारियों व महानुभावों को आह्वान किया कि आर्यवीर दल को एक ट्रेनिंग सैन्टर की आवश्यकता है। इस ट्रेनिंग सैन्टर के माध्यम से युवाओं के चरित्र निर्माण, राष्ट्र रक्षा की भावनाओं को डालने का कार्य व वैदिक संस्कारों के माध्यम से युवाओं को सुसंस्कारित करने का कार्य पूरे वर्ष व निरन्तर चलता रहे, जिससे जो इस राष्ट्र का गौरवमयी इतिहास राम व कृष्ण के समय मे रहा है उसे पुनः आज बनाया जा सके। जिस प्रकार वैदिक काल में नारी का सम्मान होता था, आज उस नारी सम्मान को पूरा विश्व जाने व स्वतः स्वम् सम्मान करें, आदि विषयों को रखते हुए दिल्ली प्रदेश अनुशासित व सुन्दर शिविर का आयोजन करने के लिए बधाई दी। अन्य अतिथियों द्वारा भी प्रोत्साहित व प्रेरणादायक शब्दों द्वारा आर्यवीरों को आशीर्वाद प्रदान किया गया।

शिविर में आए आर्यवीरों में से जिसने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया उन सभी को मुख्य अतिथियों द्वारा प्रमाण पत्र, पुरस्कार, मैडल देकर सम्मानित किया गया। सभी कार्यकर्ताओं को प्रशस्ती पत्र देकर सम्मानित किया गया। सभी कमाण्डो आर्यवीरों को मैडल देकर श्री राजीव गुलाटी जी ने सम्मानित किया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी के नेतृत्व में करौंथा में रामपाल के ढोंग के विरुद्ध संघर्ष में दिल्ली के आर्यवीर श्री पवन आर्य व श्री दिनेश आर्य बुरी तरह लाठी और गोली से घायल हुए, उनका भी श्री अशोक कुमार चौहान, श्री राजीव गुलाटी, श्री राकेश ग्रोवर श्री तुषार आर्य एवं श्री चान्द सिंह आर्य ने सम्मानित किया। जब इनका सम्मान हो रहा था उस समय सभी को आर्यवीर दल पर गर्व हो रहा था।

समापन पर सभी आर्यवीरों द्वारा बहुत सुन्दर परेड़ संचालन, सामूहिक सर्वांगसुन्दर व्यायाम, नियुद्धम व सूर्य नमस्कार का प्रदर्शन किया गया। विभिन्न शिक्षकों के नेतृत्व में लकड़ी मलखम्ब, रस्सा मलखम, दण्ड बैठक, आसन, स्तूप, लाठी, तलवार, भाला आदि से आर्यवीरों द्वारा साहसपूर्ण प्रदर्शन किए गए।

कहीं पर प्राकृतिक आपदा आए, उस समय पर किस प्रकार आर्यवीर दल अपने द्वारा राहत कार्य करता है, उसका सेवा शिविर के माध्यम से आर्यवीरों ने मात्र 8–10 मिनट के अन्दर कैम्प स्थापित करके लघु प्रदर्शन किया। अन्त में कमाण्डो का भव्य प्रदर्शन आर्यवीरों द्वारा किया गया। इस ट्रेनिंग में रस्से पर बन्दर की तरह चलना, आग के ऊपर से कूदना, कोहनियों के बल चलना, सात फुट की दीवार से कूदना, लकड़ी की बल्ली पर से दौड़कर भागना, तीन मंजिल छत से उतरना आदि कार्यों को प्रदर्शित किया।

पूरे शिविर में दिल्ली सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य द्वारा यज्ञ, यज्ञोपवीत संस्कार व बौद्धिक करवाया गया। ब्र. सन्दीप आर्य ने समापन समारोह में सभी आर्यवीरों को प्रतिज्ञा कराई। आर्यवीरों ने शपथ ली कि हम राष्ट्र व समाज की निःस्वार्थ भाव से सेवा करेंगे। आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में जाएंगे। दैनिक शाखा में जाएंगे या लगाएंगे। इस शिविर में लगभग 20 आर्यवीरों ने दैनिक शाखा लगाने का प्रण लिया।

समापन समारोह पर कुछ आर्यवीरों ने अपने शिविर के अनुभव बताए व कुछ ने इस शिविर के माध्यम से अपने जीवन में जो परिवर्तन आए हैं उनका वर्णन किया व अच्छी जीवन शैली का संकल्प लिया। ब्र. राजसिंह आर्य जी ने दैनिक यज्ञ में लगभग 48 आर्यवीरों से संकल्प कराया कि वे अपने जीवन में मांसाहार छोड़कर पूर्णतः शाकाहार अपनाएंगे।

समापन समारोह पर आए हुए मुख्य अतिथियों व स्कूल को दल की तरफ से ट्रोफियां प्रदान कर सम्मानित किया गया। मंच संचालन श्री सुन्दर आर्य व बृहस्पति आर्य ने किया। सैनिक आज्ञाएं श्री दिनेश आर्य ने दी। कार्यक्रम के अन्त में श्री बृहस्पति आर्य ने आए हुए समस्त अतिथियों, विद्यालय स्टाफ, आर्यसमाज के अधिकारियों, वीरांगना दल के अधिकारियों कार्यकर्ताओं, शिक्षकों, हलवाई टैण्ट आदि की व्यवस्था करने वालों का धन्यवाद किया। तदुपरान्त ध्वजावतरण किया गया व श्री दिनेश आर्य जी ने संचालक श्री वीरेन्द्र आर्य को सुरक्षित ध्वज सौंपा। *– प्रचार मन्त्री*

नेट पर पढ़े-पढ़ाएँ और डाउनलोड करें : वेद, योग तथा अन्य वैदिक साहित्य

वेद, योग, पादानुक्रमकोश (संस्कृत में पहली बार) अन्य वैदिक साहित्य को देख एवं डाइनलोड करने के लिए www.ved-yog.com पर जाएँ। सम्पूर्ण आर्ष साहित्य इस बेवसाइट पर देने का प्रयास जारी है। और अधिक जानकारी के लिए श्री सतीश आर्य की चलभाष संख्या 9810815845 से सम्पर्क किया जा सकता है।

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन शुल्क भेजें। इस कार्य का यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें अन्यथा **इस मास से आर्यसन्देश भेजना बन्द कर दिया जाएगा। वार्षिक शुल्क 250/– रुपये** तथा **आजीवन शुल्क 1000/– रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए सदस्य संख्या तथा पिनकोड अवश्य लिखें। – *सम्पादक*

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के
प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर की चित्रमय झांकी

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में पांच दिवसीय वैचारिक क्रान्ति शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज सैक्टर–6, दुर्ग में आयोजित पांच दिवसीय वैचारिक क्रान्ति शिविर में आए छत्तीसगढ़ के समस्त आर्यसमाजी पदाधिकारियों को दयानन्द के मिशन, आर्यसमाज के उद्देश्य, नियम व इतिहास से अवगत कराकर प्रशिक्षित किया। इस शिविर के प्रयोजन पर प्रकाश डालते हुए सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य ने कहा कि आर्यसमाज के दस नियमों में छठे नियम में उल्लिखित है कि संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना। यह तभी सार्थक हो सकेगा, जब प्रत्ये आर्यसमाजी दस नियमों को आत्मसात् करके आर्यसमाज का प्रतीक बने और जन–जन में आर्यसमाज के इतिहास, उद्देश्य, सत्यार्थ प्रकाश को प्रचारित–प्रसारित करे।

प्रमुख वक्ता आर्ष गुरुकुल सुन्दरपुर, रोहतक (हरियाणा) के आचार्य सत्यव्रत ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययनव अनुसरण करते हुए अपने परिवार समाज व देश को अपसंस्कृति से बचाया जा सकता है। वैदिक संस्कृति ही विश्व धर्म का सशक्त वलय है, इसे लोगों के बीच स्थापित करना हर आर्यसमाजी का धार्मिक कर्त्तव्य है। पांच दिनों तक चलने वाला यह शिविर वैदिक धर्म को मुकम्मल करने में बहुत उपयोगी सिद्ध नजर आपने की वजह से शिविर में आए आर्यसमाज के पदाधिकारियों ने छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य सहित समस्त पदाधिकारियों ने इस शिविर को निरन्तर चलते रहने की अपेक्षा जाहिर की। इस शिविर में सभामन्त्री श्री दीनानाथ वर्मा, उपमन्त्री श्री रवि आर्य, श्री दिलीप आर्य, कार्यालय मन्त्री श्री जोगीराम आर्य, श्री धरनीधर आर्य, श्री मनोहरलाल चड्ढा, श्री राजकुमार भल्ला सहित छत्तीसगढ़ के समस्त जिलों से लगभग 150 से अधिक शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर के संयोजक सभा के उप प्रधान श्री जितेन्द्र प्रकाश सल्होत्रा व सभा कोषाध्यक्ष श्री अवनीभूषण पुरंग के अथक प्रयास से वांछित प्रतिफल हासिल करने में सफल हो सका है।

छत्तीसगढ़ में आयोजित वैचारिक क्रान्ति शिविर में पधारे शिविरार्थियों को सम्बोधित करते दिल्ली सभा के महामन्त्री एवं सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी साथ में मंचस्थ 36गढ़ सभा के मन्त्री श्री दीनानाथ वर्मा एवं प्रधान आचार्य अंशूदेव जी एवं शिविर में उपस्थित शिाविरार्थी एवं कार्यकर्ता।

आर्यसमाज डोरीवालान, नई दिल्ली के नवनिर्मित सत्संग हॉल एवं यज्ञशाला का उदघाटन सम्पन्न

आर्यसमाज डोरीवालान के नवनिर्मित सत्संग हॉल एवं यज्ञशाला का उदघाटन रविवार प्रातः 9 बजे से 12 बजे तक सम्पन्न हुआ। दिल्ली की उपमहापौर श्रीमती पूर्णिमा विद्यार्थी जी ने इसका उदघाटन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान ब्र. राज सिंह जी ने की। आर्चाय वेदश्रमी जी ने बहुत सुन्दर ढंग से वेद मंत्रों द्वारा यज्ञशाला का उदघाटन करवाया इसके पश्चात अपने मधुर उपदेश एवं बहन सुदेश आर्य जी के मधुर भजनों ने कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया।

दिल्ली सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह जी ने आर्यसमाज को बनवाने के लिए सभी आए हुए दानदाताओं को सत्यार्थ प्रकाश एवं तीन अन्य पुस्तकें भेंट करते हुए धन्यवाद व्यक्त किया।

आर्यसमाज के प्रधान श्री वागीश ईसर ने आए हुए सभी मेहमानों का स्वागत किया एवं दानदाताओं का हृदय से आभार प्रकट किया तथा भविष्य में भी आर्यसमाज की उन्नति के लिए उनसे सहयोग देने का आग्रह किया। वागीश जी ने आग्रह किया कि आर्यसमाज का काम भवन निर्माण करना नहीं है अपितु व्यक्ति निर्माण करना है। उन्होंने कहा इसलिए आप सभी से अनुरोध है कि अपने बच्चों सहित प्रत्येक रविवार को यज्ञ एवं सत्संग में उपस्थित अवश्य हों।

पूर्व प्रधान श्री ओम प्रकाश नरूला जी ने आर्य समाज द्वारा किए गए कार्यो की विस्तृत जानकारी दी एवं आए हुए सभी महानुभावों का हृदय से स्वागत किया।

आर्यसमाज करोलबाग के प्रधान श्री कीर्ति शर्मा ने बताया कि वह भी बचपन से इस आर्यसमाज के साथ जुड़े हुए हैं। कीर्ति जी के पिताजी आचार्य मोद प्रकाश शास्त्री जी एवं समस्त परिवार इस आर्यसमाज के साथ अनेक वर्षों तक कार्यरत है एवं वर्तमान में श्री वागीश जी इस समाज के प्रधान हैं।

इस कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि हरिजन बस्ती के बन्धुओं को यज्ञशाला उदघाटन में यजमान बनाया गया जो कि महर्षि दयानन्द का मूल मंत्र था।

इस कार्यक्रम में उपमहापौर के अलावा श्री सुरेन्द्र पाल रातावाल जी पूर्व मंत्री दिल्ली सरकार, श्रीमती मधु खुराना जी निगम पार्षद, श्रीमती नीलम धीमान चेयरमैन सदर जोन, श्रीमती श्याम बाला चेयरमैन करोलबाग जोन, श्री वीरेन्द्र बब्बर निगम पार्षद एवं अध्यक्ष भाजपा करोलबाग, श्री राजेश भाटिया निगम पार्षद, श्री रविन्द्र गुप्ता निगम पार्षद, श्री प्रवीन जैन पूर्व चेयरमैन सदर जोन, श्रीमती निर्मल नोबल, श्री हर्षवर्धन शर्मा, श्री रवीन्द्र सिंघल अध्यक्ष कांग्रेस कमेटी, श्री दिनेश मल्हौत्रा सामाजिक कार्यकर्ता, श्री बलदेव मदान, आर्यसमाज मॉडल बस्ती, आर्यसमाज करोलबाग एवं आर्यसमाज देवनगर के पदाधिकारियों सहित लगभग 400 लोग उपस्थित थे।

आर्यसमाज के मंत्री श्री धर्मवीर रावत, कोषाध्यक्ष श्री वेदपाल शास्त्री, प्रचार मंत्री श्री वीरेन्द्र कपूर, उप प्रधाना माता विद्यावती मदान, उप मंत्री ममता नरूला ने उपस्थित सभी मेहमानों का स्वागत एवं धन्यवाद किया। कार्यक्रम के पश्चात ऋषि लंगर की व्यवस्था भी थी।

– मन्त्री

आर्यसमाज और अन्तर्जातीय विवाह वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

– अर्जुनदेव चड्ढा

मानव–जीवन के चार स्तम्भों में गृहस्थ जीवन का द्वितीय स्थान है। अन्य तीन आश्रम भी इसी पर आश्रित हैं। यह एक उत्तदायित्वपूर्ण आश्रम है। इसी आश्रम में रहते हुए मानव सन्तानोत्पत्ति सेलेकर पालन–पोषण, शिक्षा, दीक्षा, विवाह आदि समस्त दायित्वों को पूर्ण करता है। इन दायित्वों में सबसे महत्वपूर्ण है – विवाह। यह ऐसा उत्तरदायित्व है जो दो आत्माओं के मिलन का संयोग बैठाता है। न बैठ पाने के कारण अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस दायित्व के निर्वहन का जिक्र सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में किया है। उन्होंने वर्णानुकूल सुन्दर लक्षणयुक्त कन्या से विवाह करने का निर्देश दिया है।

जहां वर्ण है वहां जन्मना जाति नहीं। सत्यार्थ प्रकाश बल देता है कि विवाह गुण–कर्म–स्वाभानुसार होने चाहिएं। यदि इस तथ्य पर विचार किया जाए तो पता चलेगा कि आर्यसमाजेत्तर समाजों में विवाह को लेकर अनेक कठिनाइयां हैं जैसे जन्मकुंडली का मिलान, मंगला–मंगली का चक्कर, शिक्षा व रोजगार समस्या, खानपान, रहन–सहन, पारिवारिक स्थितियां आदि। यद्यपि आज लड़कियों का अनुपात लड़कों से कम है फिर भी लड़की वाले बुहत परेशान हैं। आर्यसमाजेत्तर लोग एक सीमित दायरे में बंधकर, जन्मपत्री मिलाकर अनमेल विवाह कर डालते हैं,जिसका परिणाम होता है आजीवन संघर्ष। इस समस्या से आर्यसमाज के लोग भी नहीं बच पाते। वे भी जन्मना जाति के प्रभाव में लड़के–लड़कियों का विवाह स्वजाति में करते हैं जिससे अनेक समस्याए उठ खड़ी होती हैं। आर्यसमाजी परिवार की लड़की यदि आर्यसमाजेत्तर परिवार में जाकर पूरा पौराणिक बन जाती है यदि वह पारिवारिक मांसाहारी है तो वह उससे भी नहीं बच पाती। उसे उसी माहौल में जीने को मजबूर होना पड़ता है। यदि आर्यसमाजी परिवार में आर्यसमाजेत्तर परिवार की लड़की आती है तो आर्य सिद्धान्तों व संस्कारों के अभाव के कारण समायोजन करने में कठिनाई का अनुभव करती है। इससे परिवार में संघर्ष उत्पन्न होता है।

जिनके घरों में युवा लड़के या लड़कियां हैं उनके माता–पिता से उनके विवाह सम्बन्धी कठिनाई का पता किया जा सकता है। लड़कियां 35–38–40 साल की हो जाती हैं अच्छे वर ढूंढने के चक्कर में उम्र समाप्त हो जाती है यही हाल लड़कों में मिल जाएगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्पष्ट लिखा है कि 24 वर्ष तक कन्या का विवाह अवश्य हो जाना चाहिए। एक तरफ ऐसा स्पष्ट निर्देश और दूसरी तरफ उन्होंने उल्लेख किया है – ***"चाहे लड़का–लड़की मरणपर्यन्त कुमार रहें परन्तु असदृश अर्थात् परस्पर विरुद्ध गुण, कम, स्वभाव वालों का विवाह कभी न होना चाहिए।"*** जब लोग जाति के दायरे में सीमित रहेंगे तो निश्चित ही कठिनाईयां बढ़ेंगी। ऐसे में युवा युवती का मन भी दुषित हो सकता है।

इस दिशा में विगत चार वर्षों से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा किया जा रहा युवक–युवती परिचय सम्मेलन एक सराहनीय कदम है। पांचवां युवक–युवती सम्मेलन दिल्ली में 14 जुलाई, 2013 को होने जा रहा है।

पंजीकरण फार्म आर्य सन्देश के गत अंक में पृष्ठ 7 पर प्रकाशित किया गया है। इस फार्म की कटिंग भी पंजीकरण हेतु मान्य है (सम्पादक)

आर्यसमाज के लोग यदि इस दिशा में सहयोग करें तो बहुत कुछ लड़के–लड़कियो के बिवाह सम्बन्धित कठिनाई दूर हो सकती है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों पर विचार करें – ***सज्जन लोग स्वंयवर विवाह किया करें। सो विवाह वर्णानुक्रम से करें और वर्णव्यवस्था भी गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार होनी चाहिए।***

(सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास)

ऋषि के शब्दों में कितनी कल्याणभावना है। वे वर्णव्यवस्था के कितने समर्थक हैं। उन्हीं के शब्दों में – **रजवीर्य के योग से ब्राह्मण शरीर नहीं होता।** (सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास) वे लड़का–लड़की के गुण, कर्म, स्वभाव के मेल पर बल देते हैं। उन्हीं के शब्दों में, ***"जब स्त्री–पुरुष विवाह करना चाहें तब विद्या, विनय, शील, रूप, आयु, बल, कुल, शरीर का परिणाम आदि यथायोग्य होना चाहिए। जब तक इनका मेल नहीं होता तब तक विवाह में कुछ भी सुख नहीं होता।*** (सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास) इतना ही नहीं उन्होंने विवाह–सम्बन्ध दूर करने पर बल दिया है। दूरस्थ विवाह में प्रेम की डोरी बढ़ी रहती है। दोनों पक्ष के लोग एक–दूसरे के गुणावगुणों से अनभिज्ञ रहते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों में, 'दूरस्थों के विवाह में दूर–दूर प्रेम की डोरी लम्बी बढ़ जाती है। निकटस्थ विवाह में नहीं। (सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास) खान–पान, जलवायु आदि की दृष्टि से भी दूरस्थ विवाह उत्तम है। महर्षि जी के ही शब्दों में, ***'दूर देशस्थों के विवाह होने में उत्तमता है।*** (सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास) हम आर्यसमाज के लोग ऋषि की भावनाओं और उनकी कल्याणकामना को समझें।

आज विवाह की समस्या इतनी विकट होती जा रही है। जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इसका समाधान अन्तर्जातीय विवाह से ही सम्भव है जो गुण, कर्म स्वभाव से गृहीत है। यदि अपनी जाति में विवाह होने पर पति–पत्नी में संघर्ष है वह अच्छा है या अन्तर्जातीय विवाह में गुण, कर्म स्वाभानुसार सुखभोग अच्छा है? विपरीत स्वभाव वालों में विवाह का सर्वथा निषेध है।

महर्षि दयानन्द के शब्दों में ***'कन्या को मरने तक चाहे वैसी ही कुमारी रखो, परन्तु बुरे मनुष्य के साथ विवाह न करो।*** *(उपदेश मंजरी–3)*

इस दिशा में हम आर्यसमाज के लोग सक्रिय कदम नहीं उठा पा रहे हैं व दुःख झेल रहे हैं। विरोधाभास साक्षात् देख रहे हैं पर साहस नहीं कर पा रहे हैं। हमारा आर्यसमाज एक परिवार है। हम एक–दूसरे से भावनात्मक सम्बन्ध से जुड़े हुए हैं। केवल कथनमात्र से कुछ नहीं होता। हमारा कार्य दूसरों के लिए बहुत बड़ा उपदेश है। आचरण और कर्म की भाषा मौन उपदेश देती है। जो प्रभावशाली होती है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा उठाया गया यह कदम निश्चय ही भविष्य में अच्छा परिणाम देगा। रोटी और बेटी का सम्बन्ध आर्यसमाज के लिए सुखद भविष्य है। इससे हमारा दायरा विस्तृत होगा। हम एक दूसरे के निकट आएंगे। हमें संस्कारित लड़के–लड़कियां मिलेंगी। परिवार में सुख–शान्ति हो– इसके अलावा और क्या चाहिए? हमारी जाति आर्य, हमारा धर्म वैदिक, हमारा राष्ट्र आर्यवर्त, हमारा नाम आर्य, हमारा उपास्य देव ओ३म् यही हो हमारी पहचान है। इसे बनाना है। यदि हम लोग परस्पर लड़के–लड़कियों का विवाह करना प्रारम्भ कर दें तो देश में आमूलचूल परिवर्तन आएगा और जन्मना जाति–पाति मिट जाएगी। इसे मिटाना अति आवश्यक है अन्यथा हम परस्पर विभक्त होते जाएंगे और हमारी राष्ट्रीय एकता खतरे में पड़ जाएगी। इसके लिए अन्तर्जातीय विवाह एक सशक्त माध्यम है।

आर्यसमाज आर्यों का समाज है। हम अपने समाज में विवाह सम्बन्ध करें। इससे रुढ़ियां मिटेंगी, दिखावा समाप्त होगा, योग्य लड़के–लड़कियों का दायरा बड़ेगा तो विवाह सम्बन्धी समस्या स्वतः समाप्त हो जाएगी। अमीरी–गरीबी की खाई पटेगी, हमारा परिवार बड़ा होगा, अच्छे सम्बन्धों से मन में प्रसन्नता बढ़ेगी। गृहस्थ जीवन स्वर्ग के समान होगा।

गुरुकुलों के आचार्य/आचार्या से निवेदन है कि वे गुरुकुल के स्नातक/स्नातिका का ऐसा सम्बन्ध बनाएं जिससे गुरुकुल के लड़के–लड़कियों का परस्पर विवाह सम्बन्ध हो सके। वे इस दिशा में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। विवाह में विचारों का मेल परमावश्यक है। यदि गुरुकुलीय शिक्षाप्राप्त युवक को अन्य कॉन्वेंट/विद्यालय से शिक्षा प्राप्त पौराणिक लड़की से विवाह होता है तो उसके जीवन में संघर्ष होगा। इसी प्रकार गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त लड़की का विवाह यदि कॉन्वेंट/विद्यालय से शिक्षा प्राप्त लड़कों से होगा तो उसके भी जीवन में संघर्ष होगा। कारण यह है कि गुण, कर्म, स्वभाव मेल नहीं खाते हैं। वैदिक विचारधारा का अधिकाधिक प्रचार प्रसार हो, इसलिए यह विवाह सम्बन्ध वैदिक विचारों के अनुरूप होना चाहिए।

आर्यसमाज को आदर्श समाज बनाएं। योग्य स्त्री–पुरुषों से योग्य आदर्श समाज बनेगा जिसका माध्यम अन्तर्जातीय विवाह है। मेरे सामने कितने अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न हुए हैं और वे युवक–युवती सुखद जीवन व्यतीत कर रहे हैं और कितने ऐसे जातीय विवाह हुए हैं जिनके मध्य संघर्ष है। जन्मकुण्डली, मंगला–मंगली, राशि ग्रह, मुहूर्त, शुभवाद, अच्छा–बुरा दिन, नाड़ी मेल, सबको तिलांजलि देकर समाज के समक्ष सत्य को प्रतिष्ठापित करना होगा। यह युग की मांग है।

विशेष निवेदन

जिसके भी घर में विवाह योग्य युवक–युवतियां हैं वे परिचय सम्मेलन हेतु रजिस्ट्रशन अवश्य करावें। इससे योग्य लड़के–लड़कियों का प्रमिलन होगा। यदि सम्मेलन में नहीं जा सकते तो कम से कम बायोडाटा भेजकर वैवाहिक पुस्तिका द्वारा सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। इससे प्रतिनिधि सभा का मनोबल बढ़ेगा और आर्यसमाज एक सकारात्मक कदम की ओर अग्रसर होगा। आर्यों से निवेदन है कि वे इस दिशा में पहल करें। यह ऐतिहासिक कार्य होगा। कहने से कुछ नहीं, सिर्फ करने से होगा। यदि हम महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाना चाहते हैं तो अन्तर्जातीय विवाह को स्वीकार करना होगा। इससे एक बहुत बड़ी सामाजिक क्रान्ति आएगी। इस क्रान्तिकारी आन्दोलन में सहयोग दें। स्वामी श्रद्धानन्द जी के सपनों को साकार करें। विवाह को सहज, सुखद बनाएं संघर्षमय नहीं। यह आर्यसमाज अन्तरात्मा की आवाज है।

प्रधान,
जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा

आवश्यकता है

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फर नगर (उ.प्र.) को निम्नलिखित पदों के लिए योग्य स्टाफ आवश्यकता है।

1. व्याकर्णाचार्य (सहायक अध्यापक) 2. क्लर्क (कम्प्यूटर की विशेष योग्यता)
3. हॉस्टल वार्डन (संरक्षक) खेल प्रशिक्षक या गुरुकुल स्नातक को वरीयता
4. रसोइया, गौसेवक एवं चपरासी।

वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें–

– आचार्य इन्द्रपाल, मुख्याधिष्ठाता, मो. 9411929528

सेवक चाहिए

आर्यसमाज बी.एन.पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली– 88 को एक सुयोग्य सेवक की आवश्यकता है। हिन्दी–अंग्रेजी का सामान्य ज्ञान हो। रहने की व्यवस्था एवं वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा। रविवार को प्रातः 8 से 10 बजे के मध्य आर्यसमाज में अथवा मन्त्री से सम्पर्क करें – *नरेन्द्र अरोड़ा, मन्त्री, मो. 9312595700*

आर्यसमाज खलासी लाइन का 50वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज सरदार पटेल मार्ग, खलासी लाइन सहारनपुर का 50वां वार्षिकोत्सव दिनां 26 से 28 मई, 2013 तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर प यज्ञ आचार्य विष्णुमित्र जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन विभिन्न विषयों पर आमन्त्रित विद्वानों के प्रवचन होते रहे। भजन श्री कुलदीप आर्य एवं श्रीमती सुदेश आर्या के हुए। – *सुरेश कुमार सेठी, मन्त्री*

आर्यसमाज गोसपुरा नं. 1 ग्वालियर वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज गोसपुरा नं. 1, ग्वालियर (म.प्र.) का वार्षिकोत्सव दिनांक 9, 10, 11 जून, 2013 को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विभिन्न विद्वानों के प्रवचन हुए।

– कमलेश स्नातिका, मन्त्री

आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ में निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर एवं बृहदयज्ञ

24 जून से 30 जून, 2013

शिविराध्यक्ष : आचार्य राजहंस मैत्रेय

शिविर में विभिन्न विद्वानों के प्रवचन एवं भजनोपदेश होंगे। शिविर में भाग लेने या अन्य कोई भी जानकारी के लिए सम्पर्क करें।– *वानप्रस्थी ईशमुनि, संयोजक 9812640989*

बालिकाओं का व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर

दिनांक 20 जून से 26 जून
समय प्रातः 8 से 12 बजे
स्थान : इण्डोर स्टेडियम, पटेल मैदान, अजमेर (राजस्थान)
भाग लेने के लिए सम्पर्क करें
– साध्वी डॉ. उत्तमायति,
संचालिका मो0 9672286863

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज रोहतास नगर, शाहदरा दिल्ली–32

प्रधान : श्री रामपाल पांचाल
मन्त्री : श्री नरेश सैनी
कोषाध्यक्ष : श्री जगदीश चन्द

आर्यसमाज पटेल नगर सैक्टर–15, गुड़गांव (हरि.)

प्रधान : श्री पदमचन्द आर्य
मन्त्री : श्री ईश्वर सिंह दहिया
कोषाध्यक्ष : श्री वेद प्रकाश मनचन्दा

आर्यसमाज गोविन्दपुरी कालकाजी, नई दिल्ली–19

प्रधान : श्री सोमदेव मल्होत्रा
मन्त्री : श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता
कोषाध्यक्ष : श्री रामलाल आर्य

आर्यसमाज सरदारपुरा जोधपुर (राज.) –342003

प्रधान : श्री एल. पी. वर्मा
मन्त्री : श्री मदनलाल गहलोत
कोषाध्यक्ष : श्री लक्ष्मण सिंह आर्य

आर्यसमाज रेलवे रोड, शकूर बस्ती, दिल्ली–110034

प्रधान : श्री राजकुमार शर्मा
मन्त्री : श्री अवधेश कुमार
कोषाध्यक्ष : श्रीमती रेखा शर्मा

आर्यसमाज तलवंडी सै. 22, कोटा (राज.)

प्रधान : श्री रघुराज सिंह कर्णावत
मन्त्री : श्री भैरोलाल शर्मा
कोषाध्यक्ष : श्री शिवदयाल गुप्ता

आर्यसमाज दरियागंज, अंसारी रोड, नई दिल्ली–2

प्रधान : श्री सत्येन्द्र कुमार गुप्ता
मन्त्री : श्री वेद प्रकाश कात्याल
कोषाध्यक्ष : श्री गौरव पुरी

आर्यसमाज सातोजोगा फतेहपुर (उ.प्र.)

प्रधान : श्री चैतन्य देव आर्य
मन्त्री : श्री शैलेन्द्र सिंह
कोषाध्यक्ष : श्री चन्द्रपाल सिंह

प्रवेश सूचना

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

विद्यालय विभाग (हरिद्वार) उत्तराखण्ड – 249404

आधुनिक सुविधाओं सहित आवासीय विद्यालय (10+2) गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय–विभाग द्वारा हरिद्वार में सत्र 2013–17 हेतु कक्षा 1 से 9 व 11 तक प्रवेश प्रारम्भ हैं। वैदिक संस्कारों पर आधारित एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यक्रम सभी आधुनिक विषयों के साथ छात्रों के सर्वांगीण विकास की शिक्षण संस्था। विज्ञान वर्ग में **PCM** एवं **PCB** एवं **वाणिज्य वर्ग** तथा कला वर्ग। हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम। **प्रवेश 1 से 20 जुलाई, 2013** अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

– जयप्रकाश विद्यालंकार, सहायक मुख्याधिष्ठाता,
9927016872, 9412025930, 9412024149,
9690679382, 9927084378
Wec : www.gurukulkangrividyala.org

आर्य विद्या सभा सलखिया, रायगढ़ (छ.ग.)

आर्य विद्या सभा सलखिया द्वारा संचालित एवं महर्षि सांदीपनि वेद विद्या प्रतिष्ठान उज्जैन द्वारा अनुदानित मान्यता प्राप्त वेद पाठशाला एवं छत्तीसगढ़ शासन द्वारा मान्यता प्राप्त संस्कृत विद्यालय में प्रवेश आरम्भ हैं। प्रवेश हेतु आयु 8 से 12 वर्ष, हिन्दी का ज्ञान आवश्यक। छह वर्षीय पाठ्यक्रम – सस्वर कंठस्थ वेद पाठ कार्ष ग्रन्थ, अंग्रेजी, गणित, संस्कृत, विज्ञान, कम्प्यूटर प्रशिक्षण।

सभी प्राथमिक आवश्यकताओं (भोजन, आवास, वस्त्र व साहित्य) की पूर्ति निःशुल्क। प्रवेश हेतु कोई शुल्क नहीं। विशेष सुविधा – छात्रों के प्रवेश हेतु आगमन का मार्गव्यय संस्था द्वारा वहन किया जाएगा। सम्पर्क करें–

स्वामी रामानन्द सरस्वती, अध्यक्ष (09009132088)
प्रवीण कुमार मिश्र, वेद अध्यापक (08458819225

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय (सासनी) हाथरस (उ.प्र.)

शिक्षा प्ले ग्रुप से लेकर वेदालंकार/विद्यालंकार (बी.ए.) तक प्रथमा (8) से लेकर आचार्य (एम.ए.) तक, विद्याविनोद (इंटर) तक विज्ञान वर्ग की भी शिक्षा। प्रयोग संगीत समिति, गायन, वादन में प्रभाकर (बी.ए.) तक आई.टी.आई. –कोपा (कम्प्यूटर), कटाई सिलाई ट्रेड की एन.सी.वी.टी. द्वारा मान्य व्यावसायिक शिक्षा। प्ले ग्रुप से समकक्ष बी.ए. तक अन्य विषयों के साथ–साथ हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी तीनों भाषाएं। प्रातः–सायं यज्ञ, योगासन, जूड़ो, कराटे। सुरम्य, प्राकृतिक रमणीक विस्तृत भूखण्ड में कन्याओं को संस्कारवान करने का यत्न। छात्रावास, सुरक्षा। 150/– रुपये भेजकर नियमावली मंगाएं। सम्पर्क करे–

कमला स्नातिका, मुख्याधिष्ठात्री मो. 09897479919, 9258040119
Web : WWW.sites.google.com/site/kgurukulsasni

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फर नगर (उ.प्र.)

यहां संस्कृत के साथ–साथ आधुनिक विषयों का अध्यापन भी कराया जाता है। छात्रों को उत्तम संस्कार वाले बनाने के लिए प्रतिदिन प्रातः–सायं संध्या–हवन एवं योगिक क्रियाएं कराई जाती हैं। मध्यमा स्तर की परीक्षा उप्र. माध्यमिक संस्कृत विक्षा परिषद् तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम सम्पूर्णानन्द संस्कृत महाविद्यालय वाराणसी द्वारा संचालित है। प्रवेश के लिए 5वीं पास होना अनिवार्य है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें– **– आचार्य इन्द्रपाल, मुख्याधिष्ठाता,**
9411929528, 9412595542

शोक समाचार

श्री हरिनारायण सोनी का निधन

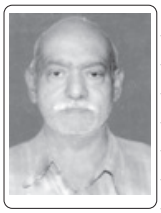

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर के पूर्व सदस्य कोलकाता प्रवासी श्री हरिनारायण सोनी जी का गत दिनों निधन हो गया। वे लगभग 60 वर्ष के थे। वे आर्यसमाज कौन्न नगर कोलकाता से भी जुड़े रहे। उन्होंने अपनी भूमि से कोलायत में 25000 वर्ग फुट जमीन आर्यसमाज को दान दी थी। वे अपनी बुलन्द आवाज एवं तेजस्वी मुखमंडल से सभी को आकर्षित करते थे। आर्यसमाजी विचारधारा आपको पैत्रक रूप में प्राप्त हुए थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। –सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार, 10 जून से रविवार, 16 जून, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 13/ 14 जून, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 12 जून, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

स्वाध्याय शिविर

दिनांक 25 से 28 जून, 2013 : गुरुकुल पौंधा, देहरादून

प्रस्थान : 24 जून रात्रि 10 बजे **वापसी** : 29 जून प्रातःकाल

स्वाध्याय शिविर का संचालन स्वामी अमृतानन्द जी के सान्निध्य में किया जाएगा। शिविर के उपरान्त लक्ष्मण झूला, ऋषिकेश, हरिद्वार आदि स्थानों भ्रमण का भी कार्यक्रम रहेगा। स्थान सीमित हैं। भाग लेने के इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें।

श्री ओमप्रकाश आर्य (9540077858) श्री सुखबीर सिंह आर्य (9350502175)

प्रतिष्ठा में,

श्री.....

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 400/-रु. सैकड़ा	मात्र 300/-रु. सैकड़ा

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 70/– किलो (5,10, 20 किलो की पैकिंग)

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 21 स्लिप्स का एक सैट मात्र 10/– रुपये प्रति शीट।

माता कमला आर्या धर्मार्थ ट्रस्ट के सहयोग से

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

वैदिक विनय

मात्र 125/– रुपये

ब्रेल लिपि में

महर्षि दयानन्द जीवनी

मात्र 1000/-रु.

आर्यजन अपनी आर्य समाज की ओर से अंध विद्यालयों को भेंट दें।

प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें।

-: प्राप्ति स्थान : -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; टैलीफैक्स 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर